The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

सत्याग्रह में नारी सहभागिता: बिहार के गांधीवादी आंदोलन (1917–1947 ई०) का विश्लेषण

पूजा कुमारी [1], प्रो. (डॉ.) उमेश कुमार[2]

[1] शोधार्थी, स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, गया, बिहार

[2] सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, गया कॉलेज, गया, बिहार

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: ***01.06.25***

*Accepted:****09.06.25***

Published: ***30/06/25***

Keywords: महिला भागीदारी;सत्याग्रह; असहयोग आंदोलन; सविनय अवज्ञा; भारत छोड़ो आंदोलन; अहिंसात्मक प्रतिरोध; स्वतंत्रता संग्राम; स्त्री नेतृत्व।

ABSTRACT

यह अध्ययन 1917 से 1947 ई० के बीच बिहार में गांधीवादी आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। चंपारण सत्याग्रह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक, महिलाओं ने अहिंसा, सत्याग्रह, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, खादी प्रचार और स्थानीय नेतृत्व के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। यह शोध दर्शाता है कि महिलाओं की भूमिका केवल सहयोगी नहीं थी, बल्कि उन्होंने आंदोलन की वैचारिक शक्ति, नैतिक आधार और संगठनात्मक संरचना को मजबूती प्रदान की। उनके साहसिक योगदान ने सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए स्वतंत्रता संग्राम में लैंगिक समावेशिता को स्थापित किया। इस अध्ययन में ऐतिहासिक स्रोतों, अभिलेखीय दस्तावेजों और समाचार पत्रों के माध्यम से महिलाओं की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बिहार की महिलाएं न केवल स्वतंत्रता की सहयोगी थीं, बल्कि उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की नींव भी रखी।

1. भूमिका

बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम केवल औपनिवेशिक शासन से राजनीतिक मुक्ति का आंदोलन नहीं था, बल्कि यह राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक पुनर्निर्माण की दिशा में चलाया गया एक व्यापक जनआंदोलन था। इस परिवर्तनकारी प्रक्रिया की वैचारिक नींव महात्मा गांधी के नेतृत्व, उनके सिद्धांतों और उनकी जीवन-दृष्टि पर आधारित थी। गांधीजी ने अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों के माध्यम से संघर्ष को एक नई वैचारिक दिशा और नैतिक ऊँचाई प्रदान की। उनका विश्वास था कि सत्य, प्रेम, त्याग और नैतिक साहस की शक्ति किसी भी हिंसक या दमनकारी सत्ता से कहीं अधिक स्थायी और प्रभावी है। यही कारण था कि स्वतंत्रता संग्राम केवल राजनीतिक प्रतिरोध तक सीमित न रहकर, भारतीय समाज के हर वर्ग और स्तर तक पहुँचा।

गांधीवादी विचारधारा ने एक ओर ब्रिटिश साम्राज्य की औपनिवेशिक नीतियों को चुनौती दी, तो दूसरी ओर भारतीय समाज की पारंपरिक और पितृसत्तात्मक संरचना में बदलाव लाने का भी प्रयास किया। इस प्रक्रिया में सबसे बड़ी चुनौती थी महिलाओं को सार्वजनिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय रूप से सम्मिलित करना। उस समय ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका प्रायः घरेलू कार्यों तक ही सीमित मानी जाती थी और उनकी राजनीतिक भागीदारी असाधारण समझी जाती थी। गांधीजी का मानना था कि अहिंसक संघर्ष में सफलता के लिए आवश्यक गुण (धैर्य, आत्मबल, त्याग और मानसिक दृढ़ता) भारतीय महिलाओं में स्वाभाविक रूप से विद्यमान हैं। इसलिए वे उन्हें राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग बनाना चाहते थे।

इस संदर्भ में बिहार विशेष महत्व रखता है। यहीं 1917 ईस्वी में गांधीजी ने चंपारण सत्याग्रह के रूप में अहिंसक प्रतिरोध का पहला सफल प्रयोग किया, जिसने सत्याग्रह की प्रभावशीलता को पूरे भारत में प्रमाणित किया। उस समय बिहार का समाज पारंपरिक और रूढ़िवादी था, फिर भी गांधीजी के आह्वान पर यहां की महिलाओं ने सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए स्वतंत्रता संग्राम में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। उनका योगदान केवल प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि आंदोलन की गति, दिशा और जनसमर्थन को निर्णायक रूप से प्रभावित करने वाला था।

Corresponding Author: poojakumarisherghati9@gmail.com

चंपारण सत्याग्रह में महिलाओं ने चरखा चलाकर, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर, और गाँव-गाँव जाकर स्वदेशी का प्रचार करते हुए आर्थिक और सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता का संदेश फैलाया। असहयोग आंदोलन (1920–22 ई.) में उन्होंने विदेशी वस्त्रों और शराब के बहिष्कार हेतु पिकेटिंग की, जनसभाओं में भाषण दिए, और ग्रामीण जनता में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। सविनय अवज्ञा आंदोलन एवं नमक सत्याग्रह (1930–34 ई.) के दौरान अनेक महिलाओं ने गिरफ्तारी, कारावास और ब्रिटिश दमन का साहसपूर्वक सामना किया। भारत छोड़ो आंदोलन (1942 ई.) में उनकी भागीदारी भूमिगत गतिविधियों, संदेश प्रसारण, गुप्त सभाओं के आयोजन, और क्रांतिकारियों को आश्रय देने जैसे जोखिमपूर्ण कार्यों में भी रही।

इन महत्त्वपूर्ण योगदानों के बावजूद स्वतंत्रता संग्राम के अधिकांश ऐतिहासिक अध्ययनों में महिलाओं की भूमिका का मूल्यांकन अपेक्षाकृत कम हुआ है। प्रायः राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर के शोध पुरुष नेताओं और प्रमुख राजनीतिक घटनाओं पर केंद्रित रहे, जिसके कारण ग्रामीण और स्थानीय स्तर पर सक्रिय महिला कार्यकर्ताओं की गाथाएं इतिहास के हाशिए पर चली गईं या केवल मौखिक परंपराओं में सीमित रह गईं। यही कारण है कि बिहार की महिलाओं की भागीदारी का क्रमवार, विश्लेषणात्मक और प्रामाणिक अध्ययन आज भी प्रासंगिक और आवश्यक है।

इस शोध का उद्देश्य गांधीवादी अहिंसा और सत्याग्रह के लैंगिक आयाम को स्पष्ट करना तथा 1917 से 1947 ईस्वी के बीच बिहार की महिलाओं की राजनीतिक और सामाजिक भूमिका का विश्लेषण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित शोध प्रश्न निर्धारित किए गए हैं—

क. 1917–1947 ईस्वी के दौरान बिहार के गांधीवादी आंदोलनों में महिलाओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भूमिकाएं क्या थीं?

ख. गांधीवादी विचारधारा ने महिलाओं को राजनीतिक संघर्ष में शामिल करने और प्रेरित करने में किस प्रकार योगदान दिया?

ग. इन आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी का तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष और दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्तन पर क्या प्रभाव पड़ा

लेख की संरचना इस प्रकार होगी पहले भाग में गांधीवादी अहिंसा और सत्याग्रह की अवधारणा तथा उसके लैंगिक दृष्टिकोण का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया जाएगा। दूसरे भाग में बिहार में हुए विभिन्न गांधीवादी आंदोलनों—चंपारण सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा, और भारत छोड़ो आंदोलन—में महिलाओं की भागीदारी का क्रमवार विश्लेषण किया जाएगा। तीसरे भाग में गांधीजी के दृष्टिकोण में आए परिवर्तनों और महिलाओं की भागीदारी के सामाजिक-राजनीतिक प्रभावों की चर्चा होगी। अंत में, इन योगदानों की ऐतिहासिक विरासत और समकालीन प्रासंगिकता पर विचार किया जाएगा।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध राजनीतिक संघर्ष का दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक रूपांतरण की जीवंत गाथा भी है। इस परिवर्तन में महिलाओं की भागीदारी ऐतिहासिक दृष्टि से उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी नैतिक दृष्टि से। विशेषकर गांधीवादी आंदोलनों के संदर्भ में, जहाँ संघर्ष के मूल साधन के रूप में अहिंसा, आत्मबल और नैतिक दबाव को अपनाया गया, महिलाओं की उपस्थिति ने आंदोलनों को नई दिशा और गहनता प्रदान की। लंबे समय तक ऐतिहासिक लेखन में महिलाओं की भूमिका को या तो गौण महत्व दिया गया या केवल प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया, किंतु हालिया शोध यह सिद्ध करते हैं कि उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के हर चरण में निर्णायक और सक्रिय योगदान दिया। यह साहित्य समीक्षा गांधीजी के सत्याग्रह दर्शन, उनके स्त्री संबंधी दृष्टिकोण, वैश्विक अनुभव, भारतीय संदर्भ और बिहार की महिलाओं की ऐतिहासिक सहभागिता को केंद्र में रखती है।

2.1 गांधीजी का सत्याग्रह और महिलाओं की भूमिका

महात्मा गांधी के लिए स्वतंत्रता का आशय केवल औपनिवेशिक सत्ता से राजनीतिक मुक्ति तक सीमित नहीं था, बल्कि यह नैतिक शुचिता, आत्मबल और सामाजिक चेतना पर आधारित एक व्यापक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया थी। उनका सत्याग्रह दर्शन इस विचार पर टिका था कि वास्तविक शक्ति बाहरी दबाव या हिंसक प्रतिरोध में नहीं, बल्कि अंतरात्मा की दृढ़ता, नैतिक साहस और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा में निहित है (Gandhi, 1928/2000)। गांधीजी ने सत्याग्रह

को अन्याय और शोषण के विरुद्ध एक अहिंसक संघर्ष-पद्धति के रूप में परिभाषित किया, जिसके प्रमुख स्तंभ धैर्य, करुणा, आत्म-त्याग और नैतिक अनुशासन हैं। उनका मानना था कि यह केवल राजनीतिक रणनीति नहीं, बल्कि जीवन दृष्टि और सामाजिक आचरण का भी अंग है। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के अपने प्रारंभिक प्रयोगों के दौरान गांधीजी ने प्रत्यक्ष अनुभव किया कि महिलाएं सहिष्णुता, त्याग, संगठन क्षमता और साहस में अद्वितीय योगदान दे सकती हैं (Du Toit, 2022)। वहाँ भारतीय महिलाओं ने नस्लीय भेदभाव और औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध मोर्चा संभालते हुए न केवल सार्वजनिक नेतृत्व का प्रदर्शन किया, बल्कि आंदोलन की नैतिक ऊर्जा को भी सुदृढ़ किया।

भारत लौटने के बाद गांधीजी ने इस अनुभव को भारतीय परिस्थितियों में लागू किया। उनका मानना था कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी केवल आवश्यक ही नहीं, बल्कि आंदोलन की सफलता के लिए अपरिहार्य है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि महिलाओं का जुड़ना संघर्ष को नैतिक बल और व्यापक जन-समर्थन प्रदान करेगा, जिससे स्वतंत्रता का लक्ष्य न केवल शीघ्र, बल्कि शांतिपूर्ण तरीके से प्राप्त किया जा सकेगा (Gandhi, 1931; CWMG, Vol. 46)।

2.2 महिलाओं के प्रति गांधीजी का दृष्टिकोण

गांधीजी का दृष्टिकोण पारंपरिक मूल्यों और प्रगतिशील सोच का संयोजन था। वे महिलाओं को मातृत्व, धैर्य, करुणा और आत्मसंयम का प्रतीक मानते थे, जो उन्हें सत्याग्रह के लिए उपयुक्त बनाता है (Gandhi, 1941)। उनका मानना था कि महिलाएं केवल घरेलू कार्यों तक सीमित न रहकर सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सक्रिय होकर समाज के नैतिक पुनर्गठन में योगदान दें। Basu (1984) और Forbes (1996) के अनुसार, गांधीजी ने महिलाओं को पूर्ण कानूनी समानता से अधिक नैतिक नेतृत्व और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरक भूमिका में देखा। यह दृष्टिकोण पश्चिमी नारीवाद से भिन्न होते हुए भी भारतीय स्त्रियों को स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता था।

2.3 वैश्विक संदर्भ में महिलाओं की भूमिका

henoweth और Stephan (2011) के अनुसार, जिन अहिंसक आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी 50% से अधिक रही, वे सफलता और दीर्घकालिक प्रभाव में अधिक सक्षम पाए गए। Chenoweth (2022) का मानना है कि महिलाओं की उपस्थिति राज्य की हिंसा को कम कर, आंदोलन को मानवीय स्वरूप और सामाजिक समावेशन प्रदान करती है। यही प्रवृत्ति गांधीवादी स्वतंत्रता संग्राम में भी दिखाई दी, जहाँ महिलाएं धरना, जुलूस, गिरफ्तारी और कारावास जैसी गतिविधियों में सक्रिय रहीं।

2.4 भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका

Basu (1984) के अनुसार, असहयोग आंदोलन के दौरान हजारों महिलाएं शराब की दुकानों पर पिकेटिंग, विदेशी वस्त्रों की होली और गिरफ्तारी जैसी गतिविधियों में अग्रणी रहीं। Forbes (1996) मानते हैं कि वे केवल प्रतीक नहीं, बल्कि प्रचार, संगठन और रणनीति निर्धारण में भी सक्रिय थीं। Roy (2010) के अनुसार, इन महिलाओं ने औपनिवेशिक शासन के साथ-साथ पर्दा प्रथा, बाल विवाह और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी संघर्ष किया, जिससे स्वतंत्रता संग्राम सामाजिक सुधार की दिशा में भी अग्रसर हुआ।

2.5 बिहार की महिलाओं की ऐतिहासिक भागीदारी

पारंपरिक रूप से पुरुष-प्रधान और ग्रामीण परिवेश वाला बिहार, स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं के योगदान का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है—

- **चंपारण सत्याग्रह (1917 ई०)** में ग्रामीण महिलाओं ने चरखा कातने, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने, सफाई अभियान, विद्यालय स्थापना और व्यसन मुक्ति कार्यक्रमों में भाग लेकर सक्रिय योगदान दिया (Bose, 2017)।
- **असहयोग आंदोलन (1920–22 ई०)** में उन्होंने विदेशी वस्त्रों की होली जलाने, शराबबंदी और खादी प्रचार में अग्रणी भूमिका निभाई (Basu, 1984)।

- **सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34 ई०)** के दौरान महिलाओं ने नमक कानून तोड़ने, जुलूसों में भाग लेने और गिरफ्तारी देने जैसे साहसिक कदम उठाए; कई ने जेल में कठोर दंड भी सहा (Chandra, 1989)।
- **भारत छोड़ो आंदोलन (1942** ई०) में उन्होंने भूमिगत गतिविधियों, गुप्त बैठकों, संदेश-प्रेषण और क्रांतिकारियों को आश्रय देने जैसे जोखिमपूर्ण कार्यों में भाग लिया (Mitra, 1993)।

2.6 सामाजिक सीमाओं से परे स्त्री चेतना

बिहार की महिलाओं ने पितृसत्तात्मक परंपराओं, धार्मिक वर्जनाओं और सामाजिक बंधनों को चुनौती देकर अपने अस्तित्व को पुनर्परिभाषित किया। घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर उन्होंने राष्ट्रीय मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। यह केवल राजनीतिक भागीदारी नहीं थी, बल्कि एक व्यापक सामाजिक जागरण था, जिसने यह सिद्ध किया कि स्त्रियाँ सामाजिक परिवर्तन की सक्रिय वाहक हो सकती हैं।

2.7 शोध का अंतर

यद्यपि स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका पर कई अध्ययन उपलब्ध हैं, किंतु बिहार की ग्रामीण और अपेक्षाकृत अल्पज्ञात स्त्रियों के योगदान पर केंद्रित, स्थानिक और लिंग-विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से किए गए गहन शोध अब भी सीमित हैं। इन स्त्रियों के योगदान का व्यवस्थित कालक्रमिक विश्लेषण न केवल उन्हें ऐतिहासिक मान्यता देगा, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के एक अनदेखे, किंतु महत्वपूर्ण, अध्याय को भी प्रकाश में लाएगा।

3. शोध पद्धति

यह अध्ययन 1917 से 1947 ईस्वी के मध्य बिहार में गांधीवादी आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी का विश्लेषण ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति से करता है। शोध हेतु तथ्य दो प्रमुख स्रोतों से संकलित किए गए। प्राथमिक स्रोतों में बिहार राज्य एवं राष्ट्रीय अभिलेखागार के दस्तावेज़, ब्रिटिश कालीन प्रशासनिक रिपोर्टें, *द सर्चलाइट*, *इंडियन नेशन* और *बिहार क्रॉनिकल* जैसे समकालीन समाचारपत्र, महात्मा गांधी के पत्र एवं भाषण (*द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी*), महिला स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण, निजी पत्र, डायरियाँ, तथा आंदोलनकालीन

फ़ोटोग्राफ़ और पर्चे शामिल हैं। द्वितीयक स्रोतों में स्वतंत्रता संग्राम, गांधीवादी आंदोलन और महिला भागीदारी पर आधारित मानक ग्रंथ एवं शोध-पत्र जैसे—बिपिन चंद्र, अपर्णा बसु, जेराल्डिन फोर्ब्स, जुडिथ ब्राउन के कार्य तथा एरिका चेनोवेथ और डू टॉइट के अंतरराष्ट्रीय अध्ययन सम्मिलित हैं।

अध्ययन का भौगोलिक दायरा बिहार के चंपारण, पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर और सारण जिलों तक सीमित है। संकलित सामग्री को आंदोलन-वार और कालानुक्रमिक क्रम में वर्गीकृत कर नेतृत्व, जनसंपर्क, भूमिगत गतिविधियाँ, आर्थिक योगदान तथा सामाजिक सुधार जैसे विषयगत आयामों में विश्लेषित किया गया है।

4. मुख्य चर्चा

चंपारण सत्याग्रह (1917 ई.) महात्मा गांधी का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में पहला संगठित और सफल राजनीतिक प्रयोग माना जाता है। यह केवल किसानों के शोषण के खिलाफ संघर्ष भर नहीं था, बल्कि इसने बिहार की ग्रामीण महिलाओं के सार्वजनिक जीवन और राजनीतिक चेतना के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया को भी आरंभ किया। *द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी*, *द सर्चलाइट* और *इंडियन नेशन* के 1917–18 ई. के अंकों से प्राप्त विवरणों से स्पष्ट है कि गांधीजी के चंपारण आगमन के बाद ग्रामीण महिलाएं अपने पारंपरिक घरेलू दायरे से निकलकर प्रत्यक्ष राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होने लगीं।

क. **सामाजिक और आर्थिक योगदान** — महिलाओं ने गांधीजी के स्वदेशी और स्वावलंबन के आह्वान पर चरखा चलाना शुरू किया, विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया और गांव-गांव स्वदेशी वस्त्रों के उपयोग का प्रचार किया। कई महिलाओं ने अपने परिवार के पुरुषों को आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया और घरेलू जिम्मेदारियों का पूरा भार स्वयं उठाकर उन्हें आंदोलन में सक्रिय बनाए रखा। यह परोक्ष सहयोग आंदोलन की निरंतरता और स्थायित्व के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था।

ख. **शिक्षा और स्वच्छता अभियान में भूमिका** — गांधीजी के आग्रह पर महिलाओं ने शिक्षा और स्वच्छता के प्रसार को आंदोलन का हिस्सा बनाया। कई महिलाएं स्वयं निरक्षर होते हुए भी शिक्षा के महत्व पर भाषण देतीं, घर-घर जाकर बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करतीं और स्वच्छता के लिए सामूहिक श्रम में भाग लेतीं।

ग. **नैतिक समर्थन और राजनीतिक चेतना का प्रसार** — महिलाएं सत्याग्रह सभाओं और विरोध जुलूसों में प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित रहतीं, भाषण सुनतीं, उत्साहवर्धन करतीं और कई बार पुलिसिया दमन के बावजूद सभा स्थल पर डटी रहतीं। गांधीजी के अनुसार, उनकी यह उपस्थिति आंदोलन को "नैतिक वैधता" और जनसहानुभूति प्रदान करती थी।

घ. **सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती** — उस समय ग्रामीण बिहार में महिलाओं का सार्वजनिक मंचों पर बोलना, जुलूस में शामिल होना या राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेना असाधारण माना जाता था। चंपारण आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी ने इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था को सीधी चुनौती दी। कई उदाहरण ऐसे हैं, जहां महिलाओं ने पारिवारिक विरोध और सामाजिक आलोचना के बावजूद सत्याग्रह में भाग लिया।

ङ. **दीर्घकालिक प्रभाव** — चंपारण सत्याग्रह में मिली यह प्रारंभिक राजनीतिक शिक्षा ने बिहार की महिलाओं को आगे चलकर असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलनों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार किया। यह आंदोलन उनके लिए राजनीतिक जागरूकता और संगठन क्षमता का पहला प्रशिक्षण स्थल सिद्ध हुआ।

इस प्रकार, चंपारण सत्याग्रह केवल किसानों के आर्थिक शोषण के विरुद्ध विजय नहीं था, बल्कि इसने बिहार की महिलाओं के राजनीतिक और सामाजिक उद्भव को भी गति दी। उनकी प्रत्यक्ष और परोक्ष, दोनों प्रकार की सक्रियता ने आंदोलन की संरचना और सफलता में निर्णायक योगदान दिया।

4.1 असहयोग आंदोलन

असहयोग आंदोलन (1920–22 ई.) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला व्यापक जनांदोलन था, जिसने राजनीतिक चेतना को ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों से लेकर पुरुषों और महिलाओं तक समान रूप से प्रसारित किया। बिहार की महिलाओं के लिए यह आंदोलन एक निर्णायक मोड़ था। 1917 ई. के चंपारण सत्याग्रह में मिली प्रारंभिक भागीदारी का अनुभव अब संगठित, सशक्त और अधिक प्रभावी रूप में सामने आया। गांधीजी के आह्वान और स्थानीय कांग्रेस नेताओं के प्रयासों से पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, चंपारण और सारण जैसे जिलों में महिलाओं की उपस्थिति आंदोलन के हर स्तर पर दिखाई देने लगी।

Corresponding Author: poojakumarisherghati9@gmail.com

क. **आर्थिक बहिष्कार और स्वदेशी को अपनाना**— महिलाओं ने विदेशी वस्त्र, चीनी, नमक और शराब जैसी औपनिवेशिक वस्तुओं के बहिष्कार को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बना लिया। ***द सर्चलाइट*** (1921) और ***इंडियन नेशन*** के समकालीन अंकों में वर्णित है कि उन्होंने न केवल घर में, बल्कि सार्वजनिक मंचों पर भी स्वदेशी के समर्थन में सक्रिय भूमिका निभाई। विदेशी वस्त्रों की सामूहिक होली जलाना, बाजारों में विदेशी कपड़ों की बिक्री रोकने का प्रयास करना, और खादी अपनाने के लिए परिवारों को प्रेरित करना उनकी प्रमुख गतिविधियां थीं। चरखा आंदोलन में भी कई महिलाएं अग्रणी बनीं, जिन्होंने प्रतिदिन सूत कातकर स्थानीय बुनकरों को उपलब्ध कराया, जिससे खादी के उत्पादन और वितरण को बल मिला।

ख. **शराबबंदी और पिकेटिंग में सक्रिय भागीदारी**— असहयोग आंदोलन के दौरान शराबबंदी में बिहार की महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। वे समूह बनाकर शराब की दुकानों और ताड़ी के अड्डों के बाहर धरने पर बैठतीं और उपभोक्ताओं को नैतिक आधार पर समझातीं। ***द सर्चलाइट*** और ***इंडियन नेशन*** में प्रकाशित समाचारों के अनुसार, कई जगह महिलाओं के शांतिपूर्ण पिकेटिंग अभियानों के परिणामस्वरूप शराब की दुकानें बंद हो गईं। यह गतिविधियां खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रभावी रहीं, जहां महिलाओं के सामूहिक विरोध ने शराब सेवन के विरुद्ध सामाजिक चेतना को मजबूत किया।

ग. **राष्ट्रीय शिक्षा और रचनात्मक कार्यक्रमों में योगदान** — महिलाएं केवल प्रतिरोध तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में भी अग्रणी रहीं। उन्होंने बच्चों को सरकारी और मिशनरी स्कूलों से निकालकर राष्ट्रीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने के अभियान चलाए। कई महिलाओं ने अपने घरों को अस्थायी शिक्षा केंद्र बनाया, जहां हिन्दी, संस्कृत, बुनियादी गणित और चरखा कातने की शिक्षा दी जाती थी। यह प्रयास न केवल औपनिवेशिक शिक्षा के बहिष्कार का प्रतीक था, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के पुनर्स्थापन का भी साधन बना।

घ. **राजनीतिक नेतृत्व और संगठनात्मक भूमिकाएं**— असहयोग आंदोलन ने महिलाओं को संगठनात्मक नेतृत्व और सार्वजनिक मंचों पर सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर दिया। कई स्थानों पर वे स्थानीय कांग्रेस समितियों में सचिव, कोषाध्यक्ष या प्रचारक के रूप में कार्यरत रहीं। उन्होंने जनसभाओं में भाषण देकर जनता को प्रेरित किया, राष्ट्रगीत गाए, और जुलूसों का नेतृत्व किया। *इंडियन नेशन* (1922) में दर्ज रिपोर्टों के अनुसार, पिकेटिंग और भाषणों के कारण कई महिलाओं को गिरफ्तार किया गया, जिन्होंने बिना हिचक जेल

जाने का साहस दिखाया। यह ग्रामीण समाज में महिला नेतृत्व की स्वीकृति की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था।

ङ. **सामाजिक प्रभाव और दीर्घकालिक परिणाम** — असहयोग आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने बिहार के सामाजिक ढांचे में परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज किया। जहां पहले महिलाएं घरेलू कार्यों तक सीमित थीं, अब वे सार्वजनिक जीवन में सम्मानित नेतृत्वकर्ता के रूप में देखी जाने लगीं। इस परिवर्तन ने आगे आने वाले आंदोलनों—विशेषकर सविनय अवज्ञा (1930–34) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942)—में महिला नेतृत्व की मजबूत नींव तैयार की। इस अनुभव ने उन्हें राजनीतिक दृष्टि से परिपक्व किया और सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर भी सशक्त बनाया।

4.2 सविनय अवज्ञा आंदोलन में बिहार की महिलाओं की भागीदारी

1930 ईस्वी में महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून तोड़ने के साथ प्रारंभ हुआ सविनय अवज्ञा आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक निर्णायक मोड़ था। इसने महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता को नई दिशा दी और ग्रामीण व शहरी समाज के सामाजिक ढांचे में स्थायी परिवर्तन की नींव रखी। बिहार, जो पहले ही 1917 के चंपारण सत्याग्रह और 1920–22 के असहयोग आंदोलन में महिला सक्रियता का साक्षी रहा था, इस आंदोलन में महिलाओं की और भी संगठित, व्यापक और निर्णायक भागीदारी का केंद्र बना। उनकी भूमिका अब केवल सहायक या प्रतीकात्मक न होकर आर्थिक प्रतिरोध, संगठनात्मक नेतृत्व, सामाजिक सुधार और प्रत्यक्ष संघर्ष जैसे विविध क्षेत्रों में अग्रणी बन गई।

क. **आर्थिक प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता:** गांधीजी का नमक सत्याग्रह औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के विरुद्ध प्रत्यक्ष चुनौती था। बिहार की महिलाओं ने इसे स्थानीय स्तर पर अपनाते हुए गांव-गांव नमक कानून तोड़ने की कार्रवाइयां कीं। वे तालाबों और नदी किनारों पर नमक तैयार कर लोगों में निशुल्क या सांकेतिक मूल्य पर वितरित करती थीं। यह कार्य केवल कानून की अवज्ञा नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान का प्रतीक भी था। उन्होंने विदेशी वस्त्रों और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के बहिष्कार को घर-घर पहुंचाया तथा चरखा चलाकर खादी उत्पादन को प्रोत्साहित किया, जिससे स्थानीय बुनकरों को आर्थिक सहायता मिली।

ख. **पिकेटिंग और औपनिवेशिक संस्थानों का बहिष्कार:** महिलाओं ने शराब की दुकानों, सरकारी कार्यालयों और औपनिवेशिक न्यायालयों के सामने शांतिपूर्ण पिकेटिंग की। contemporary अखबारों जैसे *The Searchlight* (1930–31) और *Indian Nation* के समाचारों में

उल्लेख है कि कई स्थानों पर महिलाओं ने पुलिसिया चेतावनी और दमन के बावजूद धरना स्थल नहीं छोड़ा। उनका यह अहिंसक प्रतिरोध राजनीतिक होने के साथ-साथ नैतिक दबाव का भी माध्यम बना, जिसने आम जनता को आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

ग. **राजनीतिक नेतृत्व और संगठनात्मक योगदान:** इस आंदोलन में महिलाओं ने स्थानीय कांग्रेस समितियों, महिला मंडलों और स्वयंसेवी संगठनों में नेतृत्व की जिम्मेदारी संभाली। वे आंदोलन की रणनीति तय करने, संसाधनों का प्रबंधन करने और जनसंपर्क कार्यों में सक्रिय रहीं। ग्रामीण क्षेत्रों में वे घर-घर जाकर महिलाओं और युवाओं को आंदोलन से जोड़तीं, सत्याग्रह की तकनीक सिखातीं और सभाओं में भाषण देकर आंदोलन के महत्व को समझातीं। इस प्रकार उन्होंने आंदोलन के संगठनात्मक ढांचे को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

घ. **गिरफ्तारी, कारावास और राजनीतिक प्रशिक्षण:** अनेक महिलाओं ने स्वेच्छा से गिरफ्तारी दी और जेल जाकर आंदोलन को गति दी। जेल में उन्होंने राजनीतिक साहित्य का अध्ययन किया, अन्य कैदियों को शिक्षित किया और संगठनात्मक अनुशासन बनाए रखा। *Indian Nation* (1932) में प्रकाशित विवरणों के अनुसार, महिला कैदियों के साहस और एकजुटता ने अन्य बंदियों को भी प्रेरित किया। कारावास उनके लिए राजनीतिक और संगठनात्मक प्रशिक्षण का एक अवसर बन गया।

ङ. **सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन और लैंगिक समानता:** महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने पारंपरिक सामाजिक मान्यताओं को चुनौती दी। पहले जहां उनकी भूमिका घरेलू दायरे तक सीमित थी, वहीं अब वे राजनीतिक रैलियों का नेतृत्व करने, सार्वजनिक भाषण देने और सामाजिक सुधार अभियानों में भाग लेने लगीं। इससे पितृसत्तात्मक ढांचे को चुनौती मिली और महिला नेतृत्व की सामाजिक स्वीकृति बढ़ी। इसने ग्रामीण समाज में लैंगिक समानता की दिशा में स्थायी प्रक्रिया शुरू की।

च. **दीर्घकालिक प्रभाव:** सविनय अवज्ञा आंदोलन ने बिहार की महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में एक अपरिहार्य शक्ति के रूप में स्थापित किया। इस आंदोलन से उन्हें जो संगठनात्मक कौशल, राजनीतिक समझ और सामूहिक नेतृत्व का अनुभव मिला, उसने उन्हें 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में और भी प्रभावशाली भूमिका निभाने के लिए तैयार किया। यह स्पष्ट हो गया कि स्वतंत्रता आंदोलन की सफलता में महिलाओं की संगठित और साहसिक भागीदारी पुरुष नेतृत्व के समान ही महत्वपूर्ण थी।

4.3 भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की महिलाओं की भागीदारी

1942 ईस्वी का भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह निर्णायक क्षण था, जब संघर्ष का स्वरूप पूरी तरह जनसहभागिता पर केंद्रित हो गया। महात्मा गांधी द्वारा दिया गया "करो या मरो" का नारा महिलाओं के लिए केवल भावनात्मक आह्वान नहीं था, बल्कि यह आत्मबल, सक्रिय प्रतिरोध और सामाजिक नेतृत्व की कसौटी बन गया। बिहार की महिलाएं इस आंदोलन में सहयोगी मात्र नहीं रहीं, बल्कि नेतृत्व और संगठन की केंद्रीय धुरी के रूप में उभरीं।

क. **भूमिगत संगठनों और गुप्त गतिविधियों में भागीदारी:** ब्रिटिश प्रशासन द्वारा कांग्रेस नेताओं की तत्काल गिरफ्तारी के बाद आंदोलन का संचालन गुप्त रूप से होने लगा। इस दौर में बिहार की कई महिलाओं ने संचार, संगठन और सुरक्षा से जुड़े कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने गुप्त बैठकों का आयोजन किया, भूमिगत नेताओं के लिए सुरक्षित आश्रय उपलब्ध कराए और संदेशवाहक के रूप में कार्य किया। पटना, गया और मुजफ्फरपुर जैसे क्षेत्रों में महिलाओं ने टेलीफोन लाइनों को बाधित करने, प्रशासनिक संदेशों को रोकने और पुलिस की गतिविधियों की जानकारी आंदोलनकारियों तक पहुँचाने का कार्य किया।

ख. **प्रदर्शन, गिरफ्तारी और दमन का सामना:** बिहार की महिलाओं ने इस आंदोलन के दौरान सक्रिय रूप से सार्वजनिक प्रदर्शन किए। उन्होंने जुलूस निकाले, सरकारी भवनों के समक्ष विरोध प्रदर्शन आयोजित किए और तिरंगा फहराकर औपनिवेशिक सत्ता को खुली चुनौती दी। अनेक स्थानों पर उन्हें लाठीचार्ज, शारीरिक हिंसा और गिरफ्तारियों का सामना करना पड़ा। *The Indian Nation* और *The Searchlight* (1942) में प्रकाशित समाचारों में उनके साहसिक प्रतिरोध और नेतृत्व का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

ग. **संगठनात्मक नेतृत्व और आंदोलन की निरंतरता:** जब पुरुष नेता जेलों में थे, उस समय महिलाओं ने आंदोलन की बागडोर संभाली। उन्होंने गांव-स्तरीय समितियों का गठन किया, रणनीतियां तैयार कीं और ग्रामीण महिलाओं को आंदोलन से जोड़ा। कई महिलाओं ने गुप्त रूप से प्रचार सामग्री तैयार की और उसे वितरित किया। स्थानीय स्तर पर उन्होंने सामुदायिक एकता बनाए रखी और पुलिसिया दमन के बावजूद आंदोलन को जारी रखा।

घ. **समाज पर प्रभाव और जागरूकता का विस्तार:** भारत छोड़ो आंदोलन ने बिहार की महिलाओं को पहली बार प्रत्यक्ष राजनीतिक नेतृत्व का अनुभव प्रदान किया। उन्होंने

स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित की, सामाजिक रूप से सक्रिय हुईं और ग्रामीण समाज में महिला नेतृत्व की नई परंपरा स्थापित की। उनका योगदान केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहा, बल्कि स्वतंत्र भारत में उनकी सामाजिक-राजनीतिक भूमिका के लिए एक मजबूत आधार बना।

4.4 गांधीवादी अहिंसा और स्त्री सहभागिता

गांधीवादी चरण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक क्रांति का दौर था, जिसमें 'अहिंसा' एक व्यापक सामाजिक दर्शन के रूप में उभरी। इसमें महिलाओं की भागीदारी संख्या से अधिक उनकी नैतिक, रणनीतिक और वैचारिक भूमिका के कारण केंद्रीय रही। बिहार जैसे पारंपरिक समाज में, जहां महिलाओं की सार्वजनिक भूमिका सीमित थी, गांधीवादी आंदोलनों ने उन्हें सशक्त और संगठित नागरिक में रूपांतरित किया। गांधीजी का विश्वास था कि महिलाओं का नैतिक बल हिंसा से अधिक प्रभावी है। उन्होंने सहनशीलता, आत्म-नियंत्रण और सत्य की शक्ति के साथ अहिंसक प्रतिरोध द्वारा औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। चंपारण सत्याग्रह से भारत छोड़ो आंदोलन तक महिलाओं ने घरेलू दायरे से निकलकर भाषण, पिकेटिंग, जेल यात्रा, गुप्त सूचना तंत्र और संगठनात्मक नेतृत्व जैसे कार्य किए। पुलिसिया दमन के बावजूद उन्होंने आंदोलन की निरंतरता बनाए रखी और नमक निर्माण, शराबबंदी अभियान व ग्रामीण जागरूकता में अग्रणी रहीं। अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों, जैसे Erica Chenoweth और Maria J. Stephan (2011) के शोध, ने सिद्ध किया है कि अहिंसक आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी सफलता की संभावना कई गुना बढ़ा देती है। बिहार इसका सशक्त उदाहरण है, जहां गांधीवादी आंदोलनों ने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम की अनिवार्य शक्ति और स्वतंत्र भारत में सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन की अग्रदूत बना दिया। गांधीजी की अहिंसा का यदि शरीर था, तो बिहार की महिलाओं की भागीदारी उसकी आत्मा थी।

5. प्रभाव और विरासत

गांधीवादी आंदोलनों में बिहार की महिलाओं की भागीदारी केवल सहायक भूमिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की आधारशिला बन गई। इन आंदोलनों ने महिलाओं को राजनीतिक चेतना, नेतृत्व कौशल और संगठनात्मक दक्षता प्रदान की। सामाजिक

वर्जनाओं से बाहर आकर उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक और नैतिक आधार दिया, जिससे भारतीय समाज में स्थायी परिवर्तन की नींव पड़ी।

क. **राजनीतिक जागरूकता और नेतृत्व का विकास**: शुरुआत में खादी कातने, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और प्रभात फेरियों जैसे प्रतीकात्मक कार्यों से जुड़ी महिलाओं ने समय के साथ नेतृत्वकारी भूमिका निभाई। विशेषकर 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में, जब पुरुष नेता जेलों में थे, महिलाओं ने जुलूसों का नेतृत्व, भूमिगत संचार व्यवस्था और प्रशासनिक प्रतिरोध की जिम्मेदारी संभाली, जिससे वे स्वतंत्र राजनीतिक इकाई के रूप में स्थापित हुईं।

ख. **सार्वजनिक क्षेत्र में उपस्थिति का विस्तार**: 1917 से पहले बिहार की महिलाओं की सार्वजनिक उपस्थिति सामाजिक और धार्मिक प्रतिबंधों के कारण नगण्य थी। गांधीवादी आंदोलनों ने उन्हें बाजार, विद्यालय, थाना परिसर और रेलवे स्टेशन जैसे सार्वजनिक स्थलों पर धरना, प्रदर्शन और बहिष्कार अभियानों में सक्रिय किया। इससे पितृसत्तात्मक सोच को सीधी चुनौती मिली और सामाजिक मानसिकता में गहरा परिवर्तन आया।

ग. **अहिंसक प्रतिरोध में रणनीतिक योगदान**: महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने आंदोलनों को नैतिक वैधता और व्यापक जनसमर्थन दिलाया। नमक कानून तोड़ने, शराबबंदी अभियान और सत्याग्रह जैसे कार्यों में उनकी मौजूदगी ने ब्रिटिश दमन तंत्र पर नैतिक दबाव बढ़ाया। जैसा कि Erica Chenoweth और Maria Stephan (2011) ने दर्शाया है, महिलाओं की भागीदारी अहिंसक आंदोलनों की सफलता की संभावना को कई गुना बढ़ाती है—बिहार इसका सशक्त उदाहरण रहा।

घ. **शिक्षा और सामाजिक सुधार में योगदान**: आंदोलनों के बाद कई महिलाएं सामाजिक परिवर्तन की अग्रदूत बनीं। उन्होंने लड़कियों के लिए विद्यालय खोले, खादी केंद्र स्थापित किए और महिला सहकारी समितियों का संचालन किया। जेल अनुभवों से प्राप्त संगठनात्मक और विधिक ज्ञान ने उन्हें स्वतंत्र भारत में पंचायतों और स्थानीय निकायों में सक्रिय भूमिका निभाने में सक्षम बनाया।

ङ. **लोकतांत्रिक परंपरा में विरासत**: गांधीवादी आंदोलनों ने महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को स्वतंत्र भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में संस्थागत स्वरूप दिया। हालांकि आरंभिक वर्षों

में महिला प्रतिनिधित्व सीमित था, लेकिन इन आंदोलनों के अनुभवों ने आगे के महिला आंदोलनों, नीतियों और शासन व्यवस्था को दिशा प्रदान की। यह विरासत भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में स्त्री सशक्तिकरण की एक मौलिक दृष्टि के रूप में स्थापित हुई।

प्रस्तुत करती है।

6. निष्कर्ष

गांधीवादी आंदोलनों ने भारतीय महिलाओं के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन की नींव रखी। विशेष रूप से बिहार की महिलाओं की भूमिका स्वतंत्रता संग्राम के उन पहलुओं में से एक रही है, जिसे ऐतिहासिक विमर्श में लंबे समय तक गौण समझा गया। किंतु 1917 ई० के चंपारण सत्याग्रह से लेकर 1942 ई० के भारत छोड़ो आंदोलन तक, बिहार की महिलाएं केवल नैतिक समर्थन की प्रतीक नहीं थीं, बल्कि प्रत्यक्ष संघर्ष, संगठनात्मक नेतृत्व, और वैचारिक दृढ़ता की वाहक बनकर उभरीं। उन्होंने गांधीजी के 'अहिंसात्मक प्रतिरोध' को सामाजिक यथार्थ में परिणत करते हुए विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, शराब विरोधी आंदोलनों, खादी प्रचार, और जेल भरो आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई। उनका यह योगदान केवल स्वतंत्रता प्राप्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि स्वतंत्र भारत में महिलाओं की सामाजिक चेतना, राजनीतिक सहभागिता और शिक्षा के क्षेत्र में जागरूकता का आधार बना। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि बिहार की महिलाओं की गांधीवादी आंदोलनों में भागीदारी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को एक समावेशी, नैतिक और जनांदोलनात्मक स्वरूप प्रदान किया। उनके अनुभव, संघर्ष और योगदान को इतिहास के मुख्य विमर्श में स्थान देना आवश्यक है, ताकि भारतीय स्वतंत्रता की गाथा एकपक्षीय नहीं, बल्कि संपूर्ण सामाजिक चेतना की साक्षी बने

संदर्भ सूची

1. बसु, अपर्णा। (1995). ***भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएं: अदृश्य चेहरे और अनसुनी आवाजें, 1930–1942***. नई दिल्ली: कनीष्का पब्लिशर्स।
2. ब्राउन, जुडिथ एम. (1991). ***गांधी: आशा के बंदी***. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

3. चटर्जी, परथा। (1993). ***राष्ट्र और उसके खंड: औपनिवेशिक और उत्तर-औपनिवेशिक इतिहास***. प्रिंसटन: प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. चेनोविथ, एरिका, एवं स्टेफन, मारिया जे. (2011). ***अहिंसक संघर्ष क्यों सफल होता है: रणनीतिक तर्क***. न्यूयॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. फोर्ब्स, जेराल्डिन। (1996). ***आधुनिक भारत में महिलाएं***. केम्ब्रिज: केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. कुमार, राधा। (1993). ***इति-वृत्त की क्रियाएं: भारत में महिलाओं के अधिकारों और नारीवाद का इतिहास, 1800–1990***. नई दिल्ली: काली फॉर वीमेन।
7. नायर, जानकी। (1996). ***औपनिवेशिक भारत में महिलाएं और कानून: एक सामाजिक इतिहास***. नई दिल्ली: काली फॉर वीमेन।
8. सरकार, सुमित। (1983). ***आधुनिक भारत: 1885–1947***. नई दिल्ली: मैकमिलन इंडिया।
9. सेन, इंद्राणी। (2000). ***पवित्र और धर्मनिरपेक्ष का प्रतिरोध: महिलाओं की सक्रियता और भारत का विभाजन***. जेंडर एंड हिस्ट्री, 10(3), 439–462. https://doi.org/10.1111/1468-0424.00103
10. थापर-ब्योर्कर्ट, शीतल। (2006). ***भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएं: अदृश्य चेहरे और अनसुनी आवाजें, 1930–1942***. नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशन।
11. दत्ता, के. के. (1971). ***बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास***. पटना: बिहार सरकार प्रकाशन।
12. ओ'हैनलोन, रोज़ी। (1994). ***औपनिवेशिक और स्वतंत्र भारत में महिला आंदोलनों की तुलना***. फेमिनिस्ट रिव्यू, 47, 21–38. https://doi.org/10.2307/1395327
13. सिंह, के. (2001). ***भारत में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास*** (खंड 2). नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

अभिलेखीय दस्तावेज़

- ***द सर्चलाइट***, पटना संस्करण (1917–1947)। स्रोत: बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना।
- ***इंडियन नेशन***, पटना संस्करण (1930–1947)। स्रोत: राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।

- ***बिहार प्रांतीय कांग्रेस समिति की कार्यवृत्तियाँ***, 1920–1946। स्रोत: नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय, नई दिल्ली।
- बासु, ए. (1984). *Women's Role in the Indian Freedom Struggle*. दिल्ली: वीका पब्लिशर्स.
- बोस, एस. (2017). *Gandhi, Women and the Nationalist Movement*. कोलकाता: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- चंद्रा, बी. (1989). *India's Struggle for Independence*. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स.
- डू टॉइट, एल. (2022). *Women and Nonviolent Movements: Global Lessons from the Past*. लंदन: रूटलेज.
- गांधी, एम. के. (1928/2000). *सत्य के प्रयोग (The Story of My Experiments with Truth)*. अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट. [प्रथम संस्करण 1928, पुनर्मुद्रण 2000]
- गांधी, एम. के. (1941). *Constructive Programme: Its Meaning and Place*. अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट.
- मित्रा, एस. (1993). *Bihar Women in the Freedom Struggle*. पटना: प्रकाशन भवन.

Corresponding Author: poojakumarisherghati9@gmail.com